मोहयाल मित्र

मोहयाल, मोह्यालियत और इतिहास–10
मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन

प्राचीन इतिहास पुस्तकों में ''मोहयाल'' शब्द नहीं है। भीमदेव, जयपाल, डाहर-जिन शासकों को हम अपने पूर्वज मानते हैं वह अपने नाम के साथ दत्त, वैद, छिब्बर आदि जाति नहीं लिखते थे। समकालीन इतिहासकारों के अनुसार वह सब ब्राह्मण अवश्य थे। आजकल के नामों वाली मोहयाल जातियाँ, और मोहयाल जाति-समूह (बिरादरी) कब संगठित हुए, इन प्रश्नों का हम यहाँ उत्तर देंगे।

हिन्दू समाज आदिकाल से केवल चार वर्णों में विभाजित था– ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र, भागवत गीता में भगवान कृष्ण स्वयं अर्जुन को उसके क्षत्रीय धर्म का पालन करने का उपदेश देते हैं, (XVIII-42-45), मनु स्मृति में लिखा है यही चार दैवी वर्ण हैं और पांचवां कोई नहीं, सभी को अपने वर्ण में ही विवाह करने का परामर्श दिया है। (I-31, 287; III-5; x-4), हर एक वर्ण अपने में एक इकाई था और उसमें कोई अंश (जाति या बिरादरी आदि) नहीं थे। कोई भी ब्राह्मण (अपना गोत्र छोड़ कर) किसी भी दूसरे ब्राह्मण परिवार में विवाह कर सकता था। कौटिल्य के ''अर्थ शास्त्र'' (चौथी शताब्दी), में भी इन चार वर्णों के व्यवसाय की विस्तृत व्याख्या है। इसके पश्चात जो यूनानी और चीनी यात्री भारत आए उन्होंने भी इन चार वर्णों का उल्लेख किया है।

1000 ई. में इस्लाम दर्रा खैबरपार कर के भारत की मुख्य भूमि पर पहुँचा। महमूद गज़्नवी के समय में अल बैरूनी नाम से विख्यात एक दार्शनिक भारत आया। उसने अपनी पुस्तक ''किताब तारीख अल हिन्द'' में बड़े आधिकारिक रूप से वर्णों के विषय में एक अलग अध्याय लिखा है और कहा है कि आदि काल से भारत में यह चार ही हैं। (IX, पृ. 99–104)। इन उदाहरणों से सिद्ध हो जाता है कि, इस्लाम के आने से पूर्व, हिंदुओं में चार ही सामाजिक श्रेणियाँ थीं जिनको वर्ण कहा जाता था।

इस इस्लामी झंझावत के आने पर देश में खलबली मच गयी। तब तक भारत को सिंध और अफगानिस्तान में इस्लाम धर्म का बहुत अनुभव हो चुका था। इस नए धर्म में समानता और समरसता की कोई संभावना नहीं थी। देश में राजनीतिक अराजकता के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ और परम्पराएँ भी सुरक्षित नहीं थी। इस विदेशी बर्बर शक्ति से बचाव के लिए जनजीवन में कई फेर बदल किये जा रहे थे। सामाजिक सुरक्षा के लिए आवश्यक था कि हिन्दू ''रोटी और बेटी के सम्बन्ध'' विधर्मियों से न जोड़ें।

उस समय हिन्दुओं के चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र), जातियों में बट गए और हर जाति ने अपनी स्पष्ट पहचान के लिए अपना एक नाम चुन लिया। परन्तु इस नई जाति में कौन थे? पिछले अंक में बताया था कि हर एक कबीले की अपनी पहचान उसका गोत्र और शाखा थी। अब क्या हुआ किपराशर गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला वंश ''बाली'' जाति (पंजाबी–जात) के नाम से पहचाना जाने लगा। भृगु गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला कबीला ''छिब्बर'' कहलाने लगा। कश्यप गोत्र और माध्यन्दिनी शाखा वाला वंश अब ''मोहन'' जाति हो गया और उस जाति का हर व्यक्ति, अपनी तात्कालिक पहचान के लिए, अपने नाम के साथ ही ''मोहन'' भी जोड़ने लगा। इसी प्रकार देश भर में सभी हिन्दू अपनी स्पष्ट पहचान के लिए नाम के साथ अपनी जाति लगाने लगे।

प्राचीन पद्ति के अनुसार कोई भी व्यक्ति (सगोत्र छोड़ कर) अपने ही वर्ण के किसी भी और परिवार में विवाह कर सकता था। परन्तु उस अराजकता और उथल पुथल में अनजाने लोगों के वर्ण का कैसे पता चले? इसके लिए, अपने ही वर्ण की, लगभग एक जैसे व्यवसाय वाली, जानी पहचानी, जातियों ने मिलकर आपस में ही विवाह करने के लिए जाति–समूह या ''बिरादरियां'' बना लीं– जैसे, खुखराइन, त्यागी, भूमिहर आदि। उसी काल खंड 1190 में, हमारे पंजाब के शस्त्रधारी, दान न लेने वाले, सात ब्राह्मण कबीलों ने भी बाली, भीमवाल, छिब्बर, दत्त, लौ, मोहन और वैद नामों से जातियां बना लीं

 For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

और अपने जाति–समूह (बिरादरी) को (मूहि + आल =) ''मूहियाल'' की संज्ञा दी।

इस प्रकार बारहवीं शताब्दी में, मोहयाल जातियों और बिरादरी का गठन भी उसी काल खंड में, भारत में इस्लाम के उदय के पश्चात हुआ।

किसी भी नई जानकारी को एकदम मानने में कठिनाई होती है। बारहवीं शताब्दी में हिन्दू समाज में जाति और बिरादरी के गठन की बात हमने विश्वसनीय और प्रमाणिक स्रोतों से ली है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

''राष्ट्र का अनेक पृथक जातियों में विघटन इस्लाम द्वारा भारत पर विजय के पश्चात हुआ''। रोमेशचंद्र दत्ता (A History of Civilisation in Ancient India-Based on Sanskrit Literature, Vol. II, p. 214, Mymensing, 1890). ''मुस्लिम विजय के पश्चात ही स्पष्ट जातियां बनीं'' ए.के. मजूमदार (Early Hindu India: A Dynastic Study, Vol. III, p. 820 Dacca, 1917) ''जिस काल (1030–1194) का हम सर्वेक्षण का रहे हैं उसके अंत की ओर ही हम देखते हैं कि ब्राह्मण एक ही इकाई नहीं रहे''। भक्त प्रसाद मजूमदार (Socio-Economic History of Northern India (1030-1194), p-93, Calcutta, 1960). इसी प्रकार सी.वी. वैद्य वासुदेव उपाध्याय, विभूति भूषण मिश्र आदि कई और भी विख्यात इतिहासकार हैं, जिन्होंने यही मत प्रतिपादित किया है। दुर्भाग्यवश, इतिहास के पठन–पाठन की पुस्तकों में इसकी जानकारी नहीं है। इसके अपने अलग कारण हैं। पश्चिमी विशेषज्ञों ने, फिर उनके आधार पर अनेक भारतीय इतिहासकारों ने, इस सीधे–साधे विषय को बुरी तरह उलझा दिया है। बहुत सी भ्रम की स्थिति इसलिए भी है कि हिन्दू समाज के कई प्रकार के अंशों–वर्ण, जाति, बिरादरी, धर्म आधारित राजनीतिक–जाति–समूह आदि– सबके लिए अंग्रेजी में केवल एक ही शब्द है: caste.

मोहयाल इतिहास की हमारी पुस्तक Afghanistan Revisited (पृ.197–190) में इस विषय की व्याख्या के पश्चात, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के ''रिसर्चजर्नल'' इतिहास दर्पण Vol. XIX, (I), 2014) में "Origin of Caste System and Mohyal Brahmans" शीर्षक से एक विस्तृत लेख भी छपवाया गया Google Search में एक लेख डाला गया: Origin of Caste in Hindu Society. htt://sites.google.com/site/originofcastesinhindusociety/home/origin

इस में कोइ संशय नहीं होना चाहिए कि पूरे हिन्दू समाज में वर्णों के विघटन और जाति/बिरादरी के ढाँचे के गठन के समान ही, मोहयाल जातियों और बिरादरी की स्थापना भी इस्लाम द्वारा भारत पर विजय के पश्चात ही हुई।

आर.टी. मोहन, *पंचकुला (मो. 09464544728)*
E-mail rtmwrite@yahoo.co.in

लोकापर्ण

कल कुरूक्षेत्र गीता विद्यालय सभागार में दोपहर 2 बजे हिन्दू शिक्षा समिति के प्रथम संगठन मंत्री, विश्व हिंदू परिषद हरियाणा के संगठन मंत्री स्व. श्री गुरू दयाल सिंह जी कौशल (भिमवाल) की दशम पुण्यतिथि पर स्मारिका विमोचन का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में विद्या भारती शोध केंद्र के निदेशक डॉ. हिम्मत सिंह जी सिन्हा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति श्री कैलाश चंद्र शर्मा, विहिप के केंद्रीय सह मंत्री श्री आनंद जी गोयल, ग्रन्थ अकादमी हरियाणा के उपाध्यक्ष श्री वीरेंद्र चौहान, बजरंग दल के दिल्ली एवं हरियाणा प्रान्त के संयोजक श्री नीरज जी दोनेरिया, मा. इंद्रेश जी की बहिन श्रीमती रीता जी, प्रख्यात उद्योगपति जय भगवान सिंगला, श्री रतन चंद जी सरदाना, कौशल परिवार के संबंधी राजा साहिब दयाल ऑफ किशनकोट (अमृतसर) के वंशज श्री पी.सी ठाकुर जी ने श्री कौशल जी के व्यक्तित्व, त्याग एवं बलिदान पर प्रकाश डाला।

श्री वीरेंद्र चौहान ने कौशल जी को भगत सिंह की श्रेणी का दृढवती एवं जूनूनी क्रांतिकारी बताया।

डॉ. सिन्हा जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गीता स्कूल की ईंटें तक श्री कौशल जी की तपस्या की यशोगाथा कहती है। आगे कहते हुए उन्होंने बताया कि यह वो टोली थी जो जिसने वेतनभोगी न होकर केवल श्री गुरू जी के स्वप्न को साकार करने के लिए अपना जीवन स्वाहा कर दिया। श्री गोयल जी ने कौशल जी के बारे में विचार प्रकट करते हुए कहा कि ये अब हमारा दायित्व है कि ऐसे नींव के पत्थर जैसे कार्यकर्त्तों को स्मरण करते रहें ताकि आने वाली पीढ़ियां उनके व्यक्तित्व, कृतित्व से प्रेरणा ले।

श्री ठाकुर साहिब ने श्री कौशल जी के बारे में कहा कि त्याग और बलिदान हमारे वंश की परम्परा रही है और हमें गर्व है कि आदरणीय कौशल जी ने पारिवारिक सदस्य होने के नाते इस परम्परा को और आगे बढ़ाया है। उन्होंने बताया कि मूलतः बटाला के भिमवाल परिवार से उनके पीढ़ियों से पारिवारिक सम्बन्ध रहे हैं। जो कि रानी सदाकौर के खास रहे।

कुलपति महोदय ने कौशल जी के बारे में कहते हुए विषय रखा कि कबीरा तुम पैदा हुए जग हंस तुम रोये, ऐसी करनी कर चलो तुम हंसो जग रोये एवं कौशल जी ने अपना जीवन इसी प्रकार से व्यतीत किया।

सभी अतिथियों का धन्यवाद श्री चित्तरंजन दयाल सिंह कौशल (डायरेक्टर, युवा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम विभाग कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय ने किया)

डा. सी.डी.एस. कौशल, *DYCA KUK*
बोधेश्वर दयाल सिंह भिमवाल, *प्रान्त प्रशिक्षण प्रमुख बजरंग दल*

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मोहयाल सभाओं की गतिविधियाँ

फरीदाबाद

फरीदाबाद मोहयाल सभा की मासिक बैठक 6 नवंबर 2016, रविवार को मोहयाल भवन में प्रधान श्री रमेश दत्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 40 मोहयाल भाई–बहन उपस्थित थे। मोहयाल प्रार्थना और गायत्री मंत्र के साथ सभा शुरू हुई।

शोकः श्रीमती सुषमा बाली पत्नी श्री नरेश बाली जी, सेक्टर 16 फरीदाबाद, जिनका स्वर्गवास 2 अक्तूबर 2016 को हुआ व श्री रमेश वैद के पिता श्री बलराम स्वरूप वैद निवासी एन.आई.टी 5, जिनका देहांत 12 अक्तूबर को हुआ। सभी ने दो मिनट का मौन रखा व दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की। श्री रमेश दत्ता जी ने कहा कि स्वर्गीय बी.एस वैद जी आरंभ से ही फरीदाबाद मोहयाल सभा के कर्मठ सदस्य रहे थे। वह प्रत्येक माह मीटिंग में उपस्थित हुआ करते थे, सितंबर की मीटिंग में भी वे उपस्थित थे। उनकी कमी मोहयाल सभा सदैव महसूस करेंगी व मोहयाल बिरादरी की यह क्षति कभी पूरी नहीं की जा सकती।

रायज़ादा के.एस. बाली जी ने पिछले माह की रिपोर्ट सभी के समक्ष प्रस्तुत की। श्रीमती वीना मेहता निवासी एस.जी.एम. नगर श्रीमती व श्री वीरेंद्र कुमार छिब्बर निवासी सेक्टर 14 व श्री पारस वैद निवासी एन.आई.टी फरीदाबाद पहली बार मीटिंग में आए थे, सभी ने उनका स्वागत किया व हमेशा मोहयाल सभा की गतिविधियों में शामिल होने का आग्रह किया। इस अवसर पर फरीदाबाद के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों– प्रगति दत्ता सुपुत्री श्री शीश दत्ता (85 प्रतिशत), हरप्रीत कौर दत्ता सुपुत्री श्री सतनाम सिंह दत्ता (80 प्रतिशत), व देवश्री दत्ता सुपुत्री श्री आशु दत्ता व सुपौत्री श्री आर.सी. दत्ता, को स्मृति चिन्ह, मैडल व 500 रु. नगद राशि देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर नन्हें मुन्ने बच्चों ने गीत व कविताएं सुनाकर सभी का मनमोह लिया। उनको भी प्रोत्साहित करने हेतु मैडल दिए गए।

श्री मिथलेश दत्ता जी ने निम्न राशि एकत्रित की– श्री आर.सी. दत्ता जी 500 रु. विधवा फंड के लिए व श्री मिथलेश दत्ता ने अपनी पत्नी श्रीमती उषा दत्ता के जन्मदिन जो कि 15 नवंबर को है, के उलक्षय में 100 रु. भेंट किए।

श्रीमती बाला बाली जी ने दिवंगत आत्माओं को भजन गाकर श्रद्धांजलि दी व प्रतिभाशाली बच्चों व उनके अभिभावकों को सुंदर भजन द्वारा बधाई दी।

श्री रमेश दत्ता जी ने अपने संबोधन में सभी को अवगत करवाया कि फरीदाबाद मोहयाल सभा की क्रिकेट टीम 17–18 दिसंबर को खन्ना जायेगी। इच्छुक मोहयाल बच्चे अपने नाम 11 दिसंबर की मीटिंग में दर्ज करवाए। उन्होंने बताया कि आज के लंच की व्यवस्था श्री आर.सी दत्ता जी ने अपनी सुपौत्री देवश्री दत्ता के बोर्ड परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक लाने की खुशी में किया है।

प्रधान श्री दत्ता जी ने सभी उपस्थितजनों को आने पर धन्यवाद किया और साथ ही सभी को सूचित किया कि अगले माह की मीटिंग 4 दिसंबर को न होकर 11 दिसंबर को मोहयाल भवन में होगी। सभी भाई–बहनों को आने का धन्यवाद किया।

रमेश दत्ता, *प्रधान* ***रायज़ादा के.एस. बाली,*** *महासचिव*
मो.: 9212557095, 9999078425 *मो. 9899068573*

नजफगढ़–नई दिल्ली

मोहयाल सभा नजफगढ़ की मासिक बैठक 06.11.2016 को प्रधान श्री शेर जंग बाली की अध्यक्षता में श्री हर्ष दत्ता, सचिव के निवास स्थान दत्ता प्लाजा 22, ओल्ड रोशनपुरा, नजफगढ़ नई दिल्ली में मोहयाली प्रार्थना व गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ आरम्भ हुई, जिसमें 13 भाई–बहनों ने भाग लिया। सभा के सचिव श्री हर्ष दत्ता जी ने पिछले माह की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, वित्त सचिव श्री बलदेव राज दत्ता जी ने लेखा–जोखा पेश किया, जिसका सब सदस्यों ने अनुमोदन किया।

प्रतिभाशाली मोहयाल विद्यार्थी सम्मानः वर्ष 2016 में 85 प्रतिशत और अधिक अंकों से उत्तीर्ण हुए दसवीं और बारहवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों को रविवार 4 दिसम्बर 2016 को सम्मानित–पुरस्कृत किया जाएगा, जिन्होंने आवेदन किया था। सम्मान–समारोह मोहयाल फाउंडेशन, ए–9, कुतुब इंस्टीटयूशनल एरिया, जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली में होगा। जनरल मोहयाल सभा के अध्यक्ष रायज़ादा बी.डी. बाली विद्यार्थियों को सम्मानित करेंगें। सम्मानित किए जाने वाले विद्यार्थियों को कोरियर द्वारा पत्र भेजकर सूचित किया जाएगा।

प्रधान जी ने अनुरोध किया कि बैठक में अधिक से अधिक सदस्य भाग ले ताकि बिरादरी में मेल–जोल बना रहे। अंत में सभी ने बढ़िया जलपान के लिए श्री हर्ष दत्ता को धन्यवाद दिया।

अगली मासिक बैठक 01 जनवरी 2017 को हर्ष दत्ता जी, सचिव के निवास स्थान दत्ता प्लाजा, 22 ओल्ड रोशनपुरा नजफगढ़, नई दिल्ली 110043 में प्रातः 10:30 बजे होगी। सभी सदस्यों से उपस्थित होने का अनुरोध है।

शेर जंग बाली, *प्रधान* ***हर्ष दत्ता,*** *सचिव*
मो.: 9871756765 *मो. 9312174583*

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

अम्बाला कैंट

दिनांक 6.11.2016 सांय 4:30 बजे 5, दयाल बाग में मीटिंग आरम्भ हुई। इस मीटिंग में दस सदस्यों ने भाग लिया। बैठक की कार्यवाही प्रधान श्री आई.आर. छिब्बर की अध्यक्षता में गायत्री मन्त्र तथा मोहियाल प्रार्थना के साथ आरम्भ हुई। सर्वप्रथम श्रीमती स्वर्णा छिब्बर पत्नी श्री अमृत प्रकाश छिब्बर, निवासी 64–न्यू दयाल बाग को, श्रद्धांजलि दी गई और दो मिनट का मौन रखा गया। उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

श्री आई.आर. छिब्बर जी ने पिछली मासिक मीटिंग की कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जिसका सबने अनुमोदन किया। दिनांक 23.10.2016 को खन्ना में एच.एफ.ओ. श्री एम.एल. दत्ता जी ने मोहयाल सभाओं के प्रधान व सचिवों की खन्ना में आयोजित मीटिंग पर प्रकाश डाला। श्री विनोद दत्त प्रधान मोहयाल सभा खन्ना द्वारा ऐसा एक मात्र सम्मेलन 27.11. 2016 को रविवार, खन्ना में होगा। जिसमें समाज के हर वर्ग के तजुर्बेकार व्यक्तियों को बुलाया जाएगा। जैसे कि– सशस्त्र सेना से, बैंक क्षेत्र से, खेल क्षेत्र, सैल्फ़ अम्पलायमैंट क्षेत्र, उद्योग जगत से जाने माने व्यक्तियों को निमंत्रण दिया जायेगा। जो लड़के–लड़कियां इस सम्मेलन में भाग लेंगे उन सभी को भविष्य के लिए अलग अलग विभागों में स्थापित होने के लिए गाईडैंस दी जायेगी, तथा मार्गदर्शन दिया जायेगा।

श्री विनोद जी ने मौजूदा सभाओं के प्रधान व सचिवों से आग्रह किया कि अपनी सभाओं से अधिकाधिक युवकक–युवतियों को, जो भविष्य की गाईडैंस चाहते हैं वह इस मौके का लाभ उठायें। जिस–जिस सभा से बच्चे आ रहे हैं वह सभा विनोद जी को बच्चों की संख्या के बारे में सूचित करें ताकि उन सभी के रहने, खाने–पीने का प्रबन्ध किया जा सके। इस सम्मेलन की सफल बनाने के लिए सभी सभाओं के सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया गया।

सभी सदस्यों से आग्रह किया गया कि दिसम्बर 2016 की मीटिंग में अगले वर्ष (2017) का चंदा और जीएमएस के आजीवन और वार्षिक सदस्यता शुल्क व मोहयाल मित्र का शुल्क जमा होगा ताकि समय पर उनको पहुँच जाऐ।

दान–राशिः कमाण्डर पी.आर. मैहता, श्री आई.आर. छिब्बर, श्री धर्मेन्द्र वैद प्रत्येक ने 500–500 रुपए, श्री एम.एल. दत्ता 250 रु., श्री डी.वी. बाली जी 200 रु. और श्री एस.के. मेहता ने 100 रु. भेंट किए।

अगली मासिक मीटिंग एम.एल. दत्ता जी ने अपने निवास स्थान 12 अग्रवाल कम्पलैक्स में 11.12.2016 सायं 4:30 बजे करने का आग्रह किया। इसके बाद जय मोहयाल के नारों के बीच सभा समाप्त हुई।

आई.आर. छिब्बर, *प्रधान* ***एचएफओ एम.एल. दत्ता,*** *महासचिव*
मो.: 9416464488 *मो. 9896102843*

जगाधरी वर्कशाप

सभा की मासिक बैठक 6 नवंबर 2016 को जंज घर मार्डन कालोनी आई.टी.आई में सभा के प्रधान श्री सतपाल दत्ता जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 15 सदस्यों ने भाग लिया।

शोक समाचारः सभी ने सर्वप्रथम श्रीमती विनोद बाला मोहन धर्मपत्नी स्व. श्री गुरमीत सिंह मोहन जिनका स्वर्गवास जम्मू में हो गया था सभा ने दो मिनट मौन रखकर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

सभा के उपप्रधान नरेश मेहता ने सभा को बताया कि उनके सुपुत्र ने पावटां साहिब में मोबाईल की दुकान खोली है। जो कि मेहता मोबाईल के नाम से है। सभा के सभी सदस्यों ने मेहता जी को बधाई दी। नरेश जी ने सभी सदस्यों को जलपान करवाया।

दिसंबर माह की सभा दिनांक 04.12.2016 को सुबह 10:30 बजे जंज घर मार्डन कालोनी यमुनानगर में होगी।

एस.पी बाली, *सचिव* ***सुरेन्द्र मेहता छिब्बर,*** *महासचिव*
मो.: 9729530102 *मो. 09355310880*

स्त्री सभा यमुनानगर

स्त्री सभा की मासिक बैठक प्रधान श्रीमती कमला दत्ता जी के निवास स्थान पर हुई, मीटिंग में सभी बहनों ने भाग लिया। श्रीमती कमला दत्ता जी ने सभा की अध्क्षता की, गायत्री मंत्र के साथ सभा की कार्यवाही हुई।

मीटिंग में कई प्रस्ताव रखे गए, आर्थिक सहायता देने के लिए विचार–विमर्श किया गया। श्रीमती बाला मेहता, श्रीमती स्नेह, श्रीमती अनिता, श्रीमती प्रेम दत्ता, श्रीमती भगीरथी बाली और श्रीमती विजय लक्ष्मी ने अपने विचार रखे।

श्रीमती कमला दत्ता की बहिन श्रीमती उषा जी भी कनाडा से आई हुई थी। उन्होंने भी मोहयाल मीटिंग में आए और अपनी शादी की सालगिरह के मौके पर स्त्री सभा को को 500 रुपए दान दिए, भगवान उनकी दीर्घायु रखे, सभी सदस्यों ने उन्हें बधाई दी। शांति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

स्त्री सभा की मासिक मीटिंग 13.10.2016 को गायत्री मंत्र के साथ श्रीमती बाला मेहता जी के निवास स्थान पर हुई। श्रीमती कमला दत्ता जी ने मीटिंग की अध्यक्षता की। सभी सदस्यों ने भाग लिया। सभी ने दीवाली की शुभ कामनाऐं एक दूसरे को दी।

स्त्री सभा की सभी बहनों ने रायज़ादा बी.डी. बाली जी और जीएमएस की पूरी टीम को भी दीवाली की शुभकामनाएं दी। आदरणीय श्री अशोक लव जी को उनके कार्यों के लिए सम्मानित किया गया सभी बहनों ने उनको बधाई दी।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

मीटिंग में श्रीमती विजय लक्ष्मी दत्ता, श्रीमती प्रेम दत्ता, श्रीमती सुनिता दत्ता और श्रीमती सूरज वैद ने अपने विचार रखे।

शांति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

श्रीमती परवीन बाली, *सचिव*

वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ और उनका निदान

बुढ़ा गये गालिब से उनके एक दोस्त ने पूछा, ''कैसे हो गालिब?'' तो शायर ने अपने चिरपरिचित अंदाज में जवाब दिया, ''अब मुशकिले हुई सब तमाम, बस! इक मर्ज़े नोतवानी (बुढ़ापा) और है।''

सच है, वृद्धावस्था आने पर ''बुढ़ापा'' अकेला ही सब से बड़ी बिमारी बन कर खड़ा हो जाता है। तभी तो बुजुर्ग माँ–बाप की दुआओं, ''उम्र लंबी हो'' को बुढ़ापे में याद कर कह उठते हैं, ''ये लम्बी उम्र और ये तन्हाई (Loneliness) हमें तो बुजुर्गों की दुआओं ने मार डाला''।।

मैं अपने 75 वर्ष के अनुभव समाजसेवी संस्थाओं, कालोनी की आर.डब्लू.ए. (Resident Welfare Association) एवं वरिष्ठ नागरिक संस्थाओं से जुड़े होने के कारण अपने अनुभव के आधार पर समाज में वरिष्ठ नागरिकों की समस्याओं के क्या कारण हैं उन पर चिन्तन–मनन करना चाहता हूँः–

1. निराश बुजुर्ग सोचने लगते है, जीवन में अब कुछ करने को नहीं रहा, खालीपन (Emptiness) खाने के दौड़ता है। जीवन एक बोझ बन गया है।
2. हम भी तो बच्चों, परिवार, समाज की सेवा करते रहे हैं पर आज हमारी दिनचर्या में कोई मददगार नहीं रहा।
3. बदले हुए माहौल में अपने को ढालना नामुमकिन है, अब समाज में पहले जैसे संस्कार नहीं रहे।
4. अगर हम बिमार पड़ गए तो हमारी देख–भाल कौन करेगा। पड़ोसियों को तो पता भी नहीं कि हमारा भी कोई अस्तित्व है।
5. नवजवान पीढ़ी स्वार्थी है, वह हमारी जरूरतों को नहीं समझती।
6. हम दो हमारे दो (Nuclear Family) की जगह अपनी मौज–मस्ती एवं स्वार्थ के वशीभूत होकर अकेला जीवन यापन (Nuclear Individual) ने ले ली है इस स्थिति में हम बुजुर्गों की कौन सोचता है?
7. नौजवान पीढ़ी के लिए हम बुजुर्गों के लिए समय ही नहीं है जो आज की भागमभाग जिन्दगी में थक कर कहीं पीछे रह गए है।
8. वृद्धों को मृत्यु का भय सताने लगता है, जबकि मौत प्रकृति का एक शाश्वत नियम है। गुरू नानक जी ने कितना सही कहा है, ''पहले मरण कबूल, जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द, मरने ते ही पाइए पूरण परमानंद।।''
9. वरिष्ठ नागरिकों की समस्याएँ कितनी गंभीर हो चुकी है जहाँ सरकार ने माना है कि, ''दिल्ली शहर भारत की राजधानी की 1.86 करोड़ जनसंख्या में 10 प्रतिशत बुजुर्ग है जिनमें साधनों के अभाव सामाजिक एवं पारिवारिक असंवेदना के कारण अधिकांश जीवन की हारी हुई लड़ाई लड़ रहे है। जब सरकार ही हाथ खड़ा कर ले तो वरिष्ठ नागरिकों का भगवान ही मालिक है।

भारत के जाने–माने कलाकार स्व. राजेश खन्ना से बुढ़ापे में एक पत्रकार ने पूछा, ''क्या हाल है जनाब का?'' तो दुःखी होकर उन्होंने कहा था,

''किसे अपना कहे काबिल नहीं मिलता
पत्थर तो बहुत मिलते है, दिल नहीं मिलता''

पत्थर दिल इन्सानों के बीच बुजुर्ग अपना स्थान कैसे बनाए यह उनके लिए किसी संर्घष से कम नहीं है पर बुजुर्गों को भी मानना होगा कि, ''जीवन है तो संघर्ष है।'' इस माहौल में वरिष्ठ नागरिकों को समस्याओं के निदान एवं बुढ़ापे में खुश कैसे रहने के लिए आवश्यक है किः–

1. अपने को प्रसन्नचित रखने के लिए 60 का इंतजार न कर 35–40 साल की आयु से ही प्रयास शुरू करने पड़ेंगे, फुजूलखर्ची न कर पैसे की बचत करें ताकि बुढ़ापे में दूसरों के आगे हाथ न फैलाना पड़े, जंक फूड, फास्ट फूड के स्थान पर स्वस्थ भोजन एवं नियमित रूप से व्यायाम कर अपनी दिनचर्या को अनुशासित करना चाहिए।
2. जीवन को भरपूर जीने की अदम्य इच्छा रखने वालों पर बढ़ती उम्र का प्रभाव तो पड़ता है पर वे मानसिक रूप से बुढ़ाते नहीं है, जब भी आप से मिलेंगे, तरोताजा मिलेंगे।
3. 99 वर्षीय हिन्दी हास्य रस के सुप्रसिद्ध कवि काका हाथरसी न बुढ़ापे में स्वस्थ और खुश कैसे रहे, अपने अन्दाज में यूँ ब्यान किया है।

''आधा खाना खा, आधा पेट जी
हंसी पेट भर कर जी, चौगुना पानी पी
और सौ बरस जी।।''

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

4. किसी ने सच कहा है कि, ''आप उतने ही बूढ़े है जितना आप सोचते है।'' ऐसे ही शानदार बुजुर्ग अकेलेपन से बचते है जो मानसिक एवं शारीरिक रूप से समाज से जुड़े रहते है उनसे समाज जीने की कला सीखता है। वे प्रसन्नचित हो कह उठते है, ''भाई जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है।''

सुबह डी.डी.ए. पार्क में सैर करने वाले मेरे एक 85 वर्षीय व्योवृद्ध मित्र वर्मा जी है जो अपने बुजुर्गियत के तजुर्बे के आधार पर बताते है, ''देखो भाई! जिन्दा रहने तक अपना मकान जमा पूँजी अपने और पत्नी के नाम रखों ज्यादा भावुक (Emotional) होने की जरूरत नहीं है। जिन बुजुर्गों के बच्चे उनका ध्यान नहीं रखते, परिताड़ित करते है उनके लिए सरकार ने बुजुर्ग ऋण योजना(Reverse Mortgage) का प्राविधान किया है, जिसका लाभ अपने जीवनकाल में उठाना चाहिए। अपनी ''फिकर नॉट'' वाली हंसी–हंसते हुए कहने लगे, ''फिर हमारे मरने के बाद सभी कुछ तो बच्चों का है।'' कौन ना मिलना चाहेगा ऐसे शानदार बुजुर्गों से जिनके पास बुढ़ापा तो दूर मौत का भय भी नहीं फटक सकता।

जापान में सरकारी अधिकारियों ने जहाँ अपनी फूकोका स्कीम के द्वारा नौजवान विद्यार्थियों को वरिष्ठ नागरिकों से जोड़ उनकी समस्याओं के निदान के लिए सफल नई पहल की है वहीं भारत में सरकारी समाज सेवी अधिकांश योजनाएँ असफल होती दिखाई देती है।

ऐसे वातावरण में मेरे व्योवृद्ध मित्र कपूर साहब ने, ''अकेले बुजुर्ग दम्पत्ति खुश कैसे रहे'' का फॉरमूला मुझे पार्क में सैर के दौरान बताया, 79 साल के कपूर साहब कहने लगे, ''भाई बाली 40 साल बीत गए है। हर रोज़ सुबह सवेरे मैं गरमागरम चाय का प्याला लेकर सोई हुई पत्नी के पास पहुँचता हूँ और कहता हूँ, ''रामप्यारी', उठो चाय पी लो'' पत्नी मुस्करा कर चाय का प्याला थाम लेती है सारा दिना चाय का प्याला हमें तरोताजा रखता है। वाह! कपूर साहब का मन भावन ''प्रेम प्याला''। सच है अगर पति–पत्नी की बनी होती है तो झोंपड़ी भी स्वर्ग बन जाती है, अगर आपस में नहीं बनती तो महल भी वीरान हो जाते है, जीवन नर्क बन जाता है।

कपूर साहिब के मनभावन प्याले की अमृत बूंदे मुझे भी प्राप्त हुई है ऐसा मेरा मानना है, आज से 16 साल पहले एक राष्ट्रीयकृत बैंक से रिटायर हुआ था, लगता था पहाड़ जैसा बुढ़ापा कैसे कटेगा। पर RWA (Resident Welfare Association) के साथियों, फुटबॉल क्लब के नौजवान खिलाड़ियों, वेस्ट देहली म्यूजिक लवर क्लब के संगीतकारों एवक वरिष्ठ नागरिक संस्थाओं के बीच, साथ ही सुखी, शानदार दाम्पत्य जीवन के चलते सोलह वर्ष कैसे बीत गए पता ही नहीं चला।

मुझे तो लगता है कहावत, ''साठा सो पाठा'' जिन्दगी साठ साल के बाद शुरू होती है, मेरे जैसे 75 वर्षीय जवानों पर समय की कसौटी पर खरी उतरती है।

बच्चों को सोचना होगा कि बुजुर्गों ने जीवन भर उनका लालनपालन किया है, अब उनका समय है कि वे उनकी देखभाल करें। यही प्यार एवं त्याग का चक्र है, जो कल वृद्ध होने पर उनके अपने बच्चों का मार्गदर्शन करेगा, ऐसे परिवार जहाँ बुजुर्गों का मानसम्मान होता है, भाग्यशाली है।

आइए, ''हम ऐसा वातावरण बनाएं जहां जवान व बूढ़े सभी के चेहरों पर सदा स्वाभाविक, दैविक मुस्कान खिली रहे।''

जी.एस. बाली, *पश्चिम विहार, नई दिल्ली*
मो. 9999003660

छिब्बर जाति के जठेरों का मेला संपन्न

छिब्बर (गौत्र भार्गव–भृगु परिवार) के जठेरों का मेला 23 अक्तूबर को गाँव दीवाली नज़दीक कंगनीवाल जिला जलंधर में जठेरों की समाधि पर बड़ी श्रद्धा से मनाया गया, जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली से आए छिब्बर–बक्शी परिवारों ने अपने पूर्वजों की समाधि पर पूजा अर्चना और हवन करते हुए बिरादरी में खुशहाली आपसी भाईचारा बढ़े इसकी प्रार्थना की हवन में अशोक छिब्बर, एस.पी. छिब्बर, पलविंदर बख्शी, धर्मपाल बक्शी (धमाँ), मनदीप बख्शी, विजय राज बख्शी, संदीप छिब्बर, कर्ण बख्शी, रोहित बख्शी के अलावा बड़ी गिनती से आए मोहयाल जनों ने हवन यक्ष में अहुततियाँ डाली और आरती की।

मेला दीवाली से पहले आने वाले एतवार को होता है। इसकी जानकारी छिब्बर/बख्शी परिवार को होती। फिर भी इसकी सूचना स्थानीय समाचार पत्रों में प्रकाशित करवा दी जाती। इस बार भी संदीप छिब्बर ने समाचार पत्रों में मेले से पहले समाचार प्रकाशित करवा दिया था। पहली बार आने वाले मोहयालों को बहुत लाभ हुआ।

मेले में सुबह से शाम तक लोगों का आना जारी रहा। कंगनीवाल और लांबड़ा गाँव के परिवारों ने सुबह नाश्ता और दोपहर में विशाल लंगर लगाया जो शाम तक चलता रहा।

दूर–दराज से पहली बार आने वाले मोहयाल छिब्बर जठेरों के बारे में जानना चाहते थे यह स्थान कब और कैसे बना? मैंने कर्ण बक्शी, रोहित बख्शी, रवि बख्शी, राकेश बक्शी, प्राण नाथ बख्शी से जानकारी प्राप्त की इन्होंने बताया हमारे पूर्वज विभाजन से पहले गाँ कांगनीवाल में रहते थे जो बाद में गाँ लांबड़ा और अन्य शहरों में शिफ्ट हो गए अब भी कुछ घर गाँ कंगनीवाल में रहते हैं।

यह स्थान गाँव दिवाली में है इस स्थान पर दो समाधियाँ हैं। इस पर निर्माण कार्य आरंभ है। इसके चारों तरफ खेत हैं। मुख्य सड़क से पाँच सौ मीटर की दूरी पर है।

अशोक कुमार दत्ता, *सचिव एमएस जलंधर शहर*
मो. 9779890717

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्रीमती अंनु बख्शी का निधन

अंनु बख्शी पुत्री स्वर्गीय श्री कुलभूषण लाल दत्ता पत्नी स्वर्गीय श्री ज्योती बख्शी पुत्र स्वर्गीय श्री बलराम बख्शी (भीमवाल) बस्ती मिठ्ठू जालंधर का निधन 40 साल की उम्र आयु में हो गया, इनके पति का निधन 11 जून 2014 को अचानक हृदयगति रुक जाने से हो गया था। इन्होंने अपने आपको संभाला, बच्चों को शक्ति दी, पुत्र विवेक ने पिता के काम को संभाला, छोटे पुत्र गिरीश को पढ़ाई के लिए विदेश भेजा, उसके बाद अचानक अस्वस्थ हो गई, जो निधन का कारण बन गया।

दत्ता परिवार की सबसे छोटी पुत्री, बख्शी परिवार की बड़ी बहु थी, बड़ी मिलनसार, हंसमुख, धार्मिक विचारों वाली अंनु बख्शी अपने बच्चों को छोड़कर चली गई, जिसने भी सुना उसे अत्यन्त दुःख हुआ।

28 अक्तूबर 2016 को उनकी आत्मिक शांति के लिए रखे गरुड पुराण पाठ का भोग और रस्म–क्रिया मंदिर बावा लाल दयाल, दिलबाग नगर में हुई, जिसमें बड़ी गिनती में सगे संबंधी मोहयाल सभा जलंधर के और मोहयाल सभा भुलत्थ के प्रधान सुभाष चंद्र दत्ता ने दिवंगत आत्मा को शांति मिले परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति मिले।

नरेंदर दत्ता ने बख्शी परिवार की ओर से 200 रुपए जीएमएस को और 200 रुपए मोहयाल सभा जलंधर को भेंट किए।

श्री नन्दकिशोर मेहता की आठवीं पुण्यतिथि

आज 8 दिसंबर हमारे बाऊ जी को दुनिया से गए हुए पूरे आठ साल हो गए हैं! समय कैसे भागता है पता भी नहीं चलता! साढ़े सात साल बाद हमारी मम्मी जी भी चली गई।

हमें हमेशा अपने बाऊ जी व मम्मी पर गर्व रहा है। आज भी मैं अपने विचार अपने बाऊ जी की याद में बड़े गर्व के साथ व्यक्त कर रही हूँ, उन्होंने अपने जीते जी कभी अपने बच्चों के खाने–पीने, पढ़ाई यहाँ तक की सभी बच्चों की शादियाँ होने तक कभी असर्मथता नहीं जताई! अपने रिश्तोंदारों के साथ भी अपनी सर्मथता अनुसार व दिल से निभाया।

वह एक जिंदादिल इंसान थे मोहयाल बिरादरी के साथ उनका विशेष लगाव था। हमने अपने बुजुर्गों से सुना था कि समय बड़ा बलवान होता है। आज मैं उसे महसूस कर पाई हूँ। मम्मी बाऊ जी के न रहने पर ऐसा लग रहा है कि जैसे पीछे मुड़ कर देखने वाला कोई नहीं रहा। इतने बड़े होने पर आज अनाथ होने का आभास हो रहा है। परन्तु साथ ही उस भगवान की आवाज आ रही है कि उनकी परछाई व पद् चिन्ह् हमेशा साथ हैं सिर्फ महसूस करना है।

फिर भी मैं इतना ज़रूर कहूँगी कि हम तीनों बहनें बड़ी खुश नसीब है कि हमें महेश जैसा भाई व मीनू जैसी भाभी भगवान ने दी है जिनमें हमारे बाऊ जी, मम्मी जी जैसे संस्कार है वह हमें उनकी कमी महसूस ही नहीं होने देते, महेश तो हम बहनों का बड़ा भाई है जो बाऊ जी के सारे फर्ज बढ़–चढ़ कर निभा रहा है।

मेरी परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह उसे लंबी आयु व समृद्धि दे, परिवार में खुशहाली दे। हम चारों बहनों व भाई को उनसे अच्छे संस्कार मिले हैं। उनके बारे में बोलूं तो यही शिक्षित, उच्च चरित्र, अनुशासित मेहनती प्रेम से परिपूर्ण काम के प्रति लगन परिवार के प्रति सेवा व प्रेम इसके बाद और भी कुछ कहूँ तो कम है।

आपकी याद में आज भी आँखें नम हो जाती है!

आपकी यादों में आपकी बेटी– ***सुनीता दत्ता***

स्वर्गीय पं. उत्तम चन्द्र लव

मेरे पिताश्री एक धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति थे, भगवान ब्रह्मा, भगवान विष्णु तथा भगवान शिव के अनन्य उपासक थे, सुबह शाम नाम स्मरण करना उनका मुख्य स्वभाव था। वे सभी जीवों में परमात्मा का अंश मानते थे। मन, वचन और कर्म से ''उसी'' में रमें रहते थे, उनका जीवन सन्त–प्रकृति का था।

उनका मोक्ष 11.11.1971 को हुआ तथा गढ़मुक्तेश्वर (बृजघाट) पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया था। आज 11.11.16 को उनके निमिन्त दानादि दिया गया तथा परमात्मा से सारे परिवार ने उनके मोक्ष के लिए प्रार्थना की। परिवार ने जीएमएस के शिक्षा फंड में 250 रुपए दान अर्पित किए।

नरेन्द्र, राजेन्द्र और सुरेन्द्र *(सभी पुत्र), बिहारी कालोनी, शाहदरा, दिल्ली, मो. 9911564481*

मोहयाल मित्र में रचनाएँ भेजने के पश्चात् प्रकाशन के लिए दो माह तक प्रतिक्षा करें। इसके पश्चात् ही कार्यालय से संपर्क करें। कृपया समस्त रचनाएँ-रिपोर्ट साफ-साफ लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। पोस्ट कार्ड या छोटे-छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर रचनाएँ न भेजें। ई-मेल से भेजी रचनाएँ और रिपोर्ट साफ-साफ लिख कर भेजें। नहीं तो छप नहीं पाएगी।

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

श्रद्धांजलि

प्यारी मेरी-दादी

ममता की मूरत, चाँद सी सूरत,
सबको थी खूब वो भाती,
आज गर्व से कह सकती हूँ मैं,
सबसे प्यारी मेरी दादी।

खूब प्यार करती वो मुझको,
''लाडो'' कह पुकारती थी मुझको,
हर बार जो होती गलती मुझसे,
आँचल में छिपा लेती मुझको,
काम हमेशा अच्छे करना,
हर बार सिखाती थी मुझको।

स्वेटर पहनकर जब वह आती,
लगती थी प्यारी सी गुड़िया,
कसकर मुझको गले लगाती,
खोलती प्यार–भरी जादू की पुड़िया।

ऊँचा थोड़ा सुनती थी वह,
पर बातें मीठी करती थी,
रोज–फोन, पर पूँछती मुझसे,
''लाडो'' आओगी कब,
पता जो होता छोड़ जायेंगी,
छुपा लेती अपने पास तब।

दूध, मलाई, दही, मक्खन,
खिला–खिलाकर बड़ा किया,
और बारी जब आयी–मेरी,
साथ मेरा क्यों छोड़ दिया?

जनम–जनम अब साथ में है हम,
यहाँ नहीं यादों में सही,
भले मिलें न यहाँ कहीं हम,
रोशन है सदा वो सितारों में कहीं।

एकता छिब्बर, *लखीमपुर, खीरी, उ.प्र. मो. 9415461474*

बेटी

सुनो सुनो सुनने वालो।
मैं भारत की बेटी हूँ।
कोख में मुझको मत दो मार।
कहती तुमसे बारम्बार।

अब मेरी पीड़ा जानो।
कहती हूँ कहना मानो।
पढ़ के भी दिखलाऊँगी।
प्यार का पाठ सिखाऊँगी।

मैं इस जग में नाम करूँ।
पहला सबसे काम करूँ।
खुल के मैं जो खेलूँगी।
विश्व को हाथ में ले लूंगी।

खुशियाँ भी बाँटूगी मैं।
दुःख सारे काटूँगी मैं।
ख्वाब पे मेरे पंख जड़ो।
मेरे संग अब तुम भी बढ़ो।

मैंने तुमको कब रोका।
तुमने हरदम है टोका।
अब न झेल मैं पाऊँगी।
गीत उडान के गाऊँगी।

दुनिया में सम्मान मिले।
अपनों से अपमान मिले।
मेरा अब सम्मान करो।
आने का आवहान करो।

बिखरूँगी धरती काँपे।
प्रलय घर में फिर झाँके।
मेरी आह न लो मुझसे।
कहती बार–बार तुमसे।

गर मैं अड़ जाऊँगी जब।
पछताओगे सारे तब।
तब मैं न कोई बात सुनूँ।
सपने अपने आप बूनूँ।

एक बार सुन लो मुझको।
धन्यवाद करूँ सबको।

पूनम मोहन, *शिव नगर, नई दिल्ली–110058*
मो. 9818526356

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

"बंधन केवल धागों या टीके का नहीं"

बंधन केवल धागों या टीके का नहीं,
बंधन भाई–बहिन के प्यार का।
रक्षा का बंधन ही नहीं,
बंधन सच्चे दुलार का।
कर्त्तव्य निभाना भूल न जाना,
मर्यादा इस त्योहार की।
याद दिलाती बीते बचपन की,
कसम मधुर मनुहार की।
ये रोली अक्षत केसर का,
टीका केवल टीका नहीं।
टीका प्यार, मनुहार का,
यादें फीकी होने देता नहीं।
सरहद के रखवालों को भी,
राखी टीका भेजना दुलार से।
दुआऐं करती हम तुम्हारी रक्षा की,
भूल न सकती तुम्हें त्योहार पै।
ताकती नजर बूढ़ी आँखों की,
माँ प्रतिपल द्वार निहार रही।
तरस गये गोदी के बच्चे,
छलके नयन अश्रुधारा बही।
पथ निहारे, पिय पुकारे,
रह–रह याद करें,
कुछ कही कुछ अनकही,
बंधन धागों का या टीके का नहीं,
बंधन प्रेम प्यार–मनुहार का सही।

नूतन वशिष्ठ "लौ", *वंसत विहार, देहरादून*
फोनः 135–2769702 मो. 7017743516

मोहयाल मित्र घर-घर पहुँचे

मोहयाल मित्र जब भी महीने की आखिर तारीखों में घर पहुँचता हैं और इसको पढ़ने के बाद मन को ऐसा लगता है कि जैसे किसी रिश्तेदार की चिट्ठी आई है और चिट्ठी (मोहयाल मित्र) पढ़ने के बाद घर के सभी सदस्यों रिश्तेदारों का हाल–चाल जान लिया हो। मोहयाल बिरादरी के हमारे बुर्जग जो इस दुनिया से बिछड़ कर और हम को छोड़ कर स्वर्ग सिधार गए हैं इसकी जानकारी जब मोहयाल मित्र से मिलती है सुनकर दुख होता है और जब इसकी चर्चा हम घर में अपने बुर्जगों से करते हैं तो वे यह ऐसे दुखद समाचार सुनकर अफसोस प्रकट करते हैं और अतीत में चले जाते हैं और पाकिस्तान में बचपन की बीती बातों को सुनाने लगते हैं। बुर्जगों का मोहयाल मित्र से लगाव बहुत ही ज्यादा है। मोहयाल मित्र में बच्चों के जन्म–दिन की तस्वीरें और बड़े बच्चों की शादी की तस्वीरें देखकर ऐसा प्रतीत होता है और आखों में थोड़ी लाली आती है जिससे मोहयाल मित्र के ये तस्वीरों वाले पन्ने ब्लैक एंड वाईट होकर भी रंगदार लगने लगते हैं। जी.एम.एस. द्वारा मोहयाल बिरादरी के शिक्षावान बच्चों को पुरस्कृत करना और मोहयाल मित्र में इनका गुणगान बहुत ही अच्छा कार्य है।

"मोहयाल मित्र के बढ़ते कदम कुछ ऐसे आगे निकल आये हैं।
जो चेहरे मोहयालों के कभी नहीं देखे, वो मोहयाल मित्र ने हमें दिखाये हैं।"

मोहयाल कौम देश की सबसे उत्तम और निडर कौम है। यह कौम से सप्त ऋषि की सन्तान हैं और इनकी बहादुरी के किस्सों से देश का इतिहास भरा पड़ा है जाहिर है इस गर्म खून, गर्म जोशीले वाले बिरादरी के लोगों और देश में छूटी कौम को एक मंच पर लाना बहुत ही कठिन कार्य है। पर मैं बधाई देता हूँ हमारे सर्वमान्य श्री बी.डी. बाली साहेब को जिन्होंने अपनी जी.एम.एस. की पूरी संचालक टीम के साथ मिलकर इन सब मोहयालों को जोड़ा ही नहीं बल्कि तरक्की के ऐसे हिमालय पर स्थापित कर दिए हैं जहां देश की दूसरी कौमों के हर कोई व्यक्ति इनको टकटकी लगाए देख रहा है कि काश हम भी इनकी तरह होते और समाज में इस बारे में मेरा व्यक्तिगत अनुभव है। मैं दुआ करता हूँ कि श्री बी.डी. बाली जी के दिशा निर्देश से पूरी मोहयाल बिरादरी और तरक्की करें।

मोहयाल मित्र के अंग्रेजी और हिन्दी के संपादक बहुत ही अच्छी समझ रखते हैं। मोहयाल बिरादी बड़े–बड़े अफसर, राजनेता, अभिनेता और जो समाज के बड़े–बड़े कार्यों से जो लोग जुड़े हैं उनका वर्णन मोहयाल मित्र में अक्सर होता है

 For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

जो बच्चों के लिए प्रेरणा स्रोत है। मोहयाल मित्र में संपादकों द्वारा अंग्रेजी और हिन्दी में सरल भाषा का प्रयोग हर किसी की समझ के अनुरूप है। संपादकों द्वारा अपना वक्त मोहयाल मित्र और सामाजिक कार्यों के लिए देना बहुत ही सराहनीय कार्य है।

मैं जी.एम.एस. को एक सुझाव भेज रहा हूँ कि जितनी भी भारत वर्ष में नगरों कस्बों में मोहयाल सभाऐं हैं उनको लिखकर भेजे की मोहयाल मित्र को घर–घर में पहुँचाने का कार्य करें और सदस्य बनाऐं जो सबसे सराहनीय कार्य होगा। पूरी मोहयाल कौम को नतमस्तक प्रणाम।

मोहयाल मित्र का सबके घर–घर होना, बहुत ही जरूरी है। इस मित्र के बिना मोहयालों के बारे में जानकारी अधूरी है।।

–रविन्द्र मेहता 'लौ'

गीता-सार

- क्यों व्यर्थ में चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।
- तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया? खाली हाथ आए, खाली हाथ चले गए। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर खुश हो रहे हो। बस यही तुम्हारे दु:खों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है। मेरा–तेरा, छोटा–बड़ा, अपना–पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, अब तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सहारा है। जो इस सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है। सब कुछ भगवान को अर्पण कर, तो तू जीवन मुक्त हो जाएगा।

शीश जो कभी झुके नहीं...

चंचल मन का विचलित होना
निश्चित है जीवन पथ पर
बहते जल सा निर्मल जीवन
जब तक आगे बढ़े नहीं...

साहस बिना छुआ है किसने
पर्वत की ऊँचाई को...
चींटी सा जीवन हो जिसका
चलते जाओ रुको नहीं...

किसी खास मकसद से कोई
कलम उठाता है अपनी
हर किताब को आदर से ही
देखो चाहे पढ़ो नहीं...

कहाँ गया वो साहस मन का
कष्टों को सहने वाला
गुरुं गोविंद सा लड़ने वाला
शीश जो कभी झुके नहीं...

पूरन चंद बाली, *मुंबई–400060*
फोनः 42954385

मोहयाल मित्र की वार्षिक सदस्यता

'मोहयाल मित्र' पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र दो सौ रुपए है। यह शुल्क जनवरी से दिसंबर तक होता है।

मोहयाल मित्र पत्रिका को वर्ष 2017 के नवीनीकरण के लिए कृपया अपना शुल्क शीघ्र भेजें।

वार्षिक शुल्क आप अपने क्षेत्र की मोहयाल सभा द्वारा भेजें। जहाँ सभा नहीं हैं वे सदस्य सीधे बैंक ड्राफ्ट, चैक या मनीआर्डर जनरल मोहयाल सभा के नाम पर भेज सकते हैं।

अपना पता पिन कोड सहित अवश्य भेजें।

आपका नवीनीकरण शुल्क 31 दिसंबर 2016 तक अवश्य मिल जाना चाहिए।

नए सदस्य जो मोहयाल मित्र अपने नाम पर मंगाना चाहते हैं वे भी 31 दिसम्बर 2016 तक अपना 200 रुपए शुल्क भेज सकते हैं।

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor

महान क्रान्तिकारी भाई परमानंद

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में कई व्यक्ति है, जिन्होंने संघर्ष में काम तो बहुत किया लेकिन अनाम ही रहे। इनमें कई ऐसे भी हैं, जिन्होंने काम तो कम किया लेकिन नाम कमाया। किसी ने काम तो बहुत किया देश हित में शहीदी चोला पहना और अनाम ही रह गये। ऐसे लोग जो देश के लिए संघर्ष करते हैं, किसी धर्म व संप्रदाय में बंटे नहीं होते, उनकी कोई जाति नहीं होती, उनकी एक ही बिरादरी होती है इन्सानियत एवं मातृभूमि का सम्मान। देशभक्ति से ओतप्रोत ऐसा ही क्रान्तिकारी व्यक्तित्व भाई परमानन्द का है, जिन्होंने अपने पूर्वजों की परंपराओं को अपनाते हुए अपना पूरा जीवन देश, धर्म स्वतंत्रता के लिए न्यौछावर कर दिया। भाई परमानंद उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने काम तो बहुत किया परन्तु अनाम ही रहे। कई अन्य शहीदों की तरह उनका जन्म दिन या उनकी पुण्यतिथि बड़े पैमाने पर नहीं मनाई जाती है। इसका एक कारण यह भी है कि भाई परमानन्द जिस धारा का प्रतिनिधित्व करते थे, उसे सत्ता और बुद्धिजीवी वर्ग ने हाशिऐ पर ही रखा। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान भाई परमानंद जी एक तेजस्वी क्रांतिकारी के रूप में प्रतिष्ठित हुए। उनकी प्रेरणा से नौजवानों ने अंग्रेजों के खिलाप संघर्ष में अपनी आहूति दी। क्रांति और संघर्ष का संस्कार भाई परमानंद जी को माता के गर्भ से मिलना शुरू हो गया था। 4 नवंबर को जयंती और 8 दिसंबर को भाई परमानंद जी की पुण्य तिथि आती है। कितने देशवासियों का ध्यान इस महान क्रांतिकारी की ओर जाता होगा? भाई परमानन्द जी के पूर्वज भाईमति दास को गुरुतेग बहादुर के साथ ही दिल्ली के तत्कालीन बादशाह ने आरे से चिरवा दिया। दसवें गुरू श्री गोविन्द सिंह जी ने इसी शहीदी परम्परा के कारण इस परिवार को भाई का सम्मान दिया था। उन्होंने कहा था कि तुम्हारे परिवार के लोग हमारे पिता गुरु तेगबहादुर के साथ शहीद हुए, इसलिए तुम हमारे भाई हो। तभी से इस परिवार के लोग अपने नाम के साथ भाई शब्द जोड़ते हैं। अपनी शहीदी परंपरा और देश पर मर मिटने वाले भाई परमानन्द जी के चचेरे भाई बाल मुकुंद को दिल्ली के हार्डिंग बम कांड में गिरफ्तार करके फाँसी दी गई थी। भाई परमानन्द जी को लाहौर षड्यन्त्र में अंग्रेजी हुकूमत ने गिरफ्तार कर लिया था। एक विशेष अदालत गठित करके उनके ऊपर महाभियोग चलाया गया था। भाई परमानन्द जी पर यह आरोप था कि उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध सश विद्रोह का षडयंत्र रचा है। उनके क्रांतिकारियों से गहरे सम्बन्ध हैं। उनके घर से बम बनाने का नुस्खा मिला है। वे संसार भर में अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध आपत्ति जनक भाषण देते रहे।

वे एक अत्यंत खतरनाक व्यक्ति है। जाहिर था, अंग्रेजों के लिए ऐसे खतरनाक व्यक्ति को अंग्रेजी शासन ने फाँसी की सज़ा सुनाई, जिससे भाई जी ने सहर्ष स्वीकार किया। अपनी फाँसी की सज़ा के बावजूद इतने खुश रहने वाले दीवाने उन्होंने इससे पहले नहीं दिखे थे। बाद में अंग्रेजी सरकार ने भाई परमानन्द जी फाँसी की सज़ा को आजीवन कारावास में तब्दील कर दिया और उन्हें अंडमान जेल में भेजा गया। अंडमान की नारकीय व्यवस्था में भाई परमानन्द जी को भयंकर शारीरिक यातनाएँ दी गईं। उन्हीं दिनों अंडमान की जेल में विनायक दामोदर सावरकर और गणेश दामोदर सावरकर भी अंग्रेजी शासन की यातनाओं का शिकार हो रहे थे। पाँच वर्षों तक अंडमान में नारकीय यातना भोगने के बाद एक दिन भाई परमानंद जी को सूचित किया गया कि उन्हें मुक्त किया जा रहा है। भाई परमानंद जी को अंग्रेजी शासन ने जनता के भय और क्रांतिकारियों के दबाव में मुक्त किया था। सनातन हिंदू संस्कृति से उनका अगाध प्रेम था। भाई परमानन्द जी महान देशभक्त, शिक्षाशास्त्री और उच्चकोटि के लेखक थे। वे अपनी वाणी से क्रांति और आज़ादी का जज़्बा पैदान करते थे। उनके संघर्ष काल से ही उनकी पत्नी और बड़ी बेटी का स्वर्गवास हो गया। खिलाफ़त के आन्दोलन को गाँधी जी के समर्थन के मुद्दे पर गाँधी जी से उनका मतभेद हो गया और वे कांग्रेस से अलग हो गए। भाई परमानन्द जी ने 1930 में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि मुस्लिम नेताओं का अंतिम उद्देश्य मातृभूमि का विभाजन करके पाकिस्तान बनाना है और कांग्रेस उस मांग को स्वीकार कर लेगी। अंततः 1947 में उनकी भविष्यवाणी सही सिद्ध हुई। देश का विभाजन उनके लिए असह्य था जिस मातृभूमि के लिए उन्होंने सर्वस्व न्यौछावर किया उसी को खंतिड होते वे कैसे देख पाते। उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि! उन्हें पुनः स्मरण करे ताकि उनके स्वप्न को साकार करने के लिए किया गया त्याग और बलिदान सम्मानित हो।

सत्येन्द्र छिब्बर, *जोधपुर (राजस्थान)*

रचनाएँ भेजते समय ध्यान दें

रचनाएँ पोस्टकार्ड या छोटे–छोटे कागज के टुकड़ों पर लिखकर न भेजें। रिपोर्ट और रचनाएँ आदि साफ़ स्पष्ट और शुद्ध लिखें जिन्हें पढ़ा जा सके। ई–मेल से रचनाएँ टाइप करके ही भेजें।

प्रत्येक रचना भेजने के पश्चात दो माह प्रतीक्षा करें। इसके पश्चात ही कार्यालय से पूछताछ करें।

मोहयाल मित्र बिरादरी की धड़कन है, बिरादरी की शान है, परिवारों के सुख–दुःख का साथी है। इससे देश–विदेश में बसे मोहयालों के समाचार एक–दूसरे तक पहुँचते हैं। रिश्ते–नाते कराने का माध्यम है। जीएमएस द्वारा किए कार्यों और योजनाओं की जानकारी का साधन है। मोहयाल मित्र का वार्षिक शुल्क केवल 200 रु. हैं

For courses in MERIT, visit: http://www.meritlogics.com

PDF compression, OCR, web optimization using a watermarked evaluation copy of CVISION PDFCompressor